❁ 27 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] बच्चे जानते हैं हम बाप के बच्चे बने हैं, बरोबर बाप से शिक्षा लेकर हम स्वर्ग में जायेंगे– नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। बाकी जो भी जीव की आत्मायें हैं वह शान्तिधाम में चली जायेंगी। घर तो जरूर जाना है। बच्चों को यह भी मालूम हुआ, अभी है रावण राज्य। इसकी भेंट में सतुयग को फिर नाम दिया जाता है राम राज्य। दो कला कम हो जाती है। उनको सूर्यवंशी, उनको चन्द्रवंशी कहा जाता है। जैसे क्रिश्चियन की डिनायस्टी एक ही चलती है, वैसे यह भी है एक ही डिनायस्टी। परन्तु उसमें सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी हैं। यह बातें कोई भी शास्त्रों में नहीं है। बाप बैठ समझाते हैं, जिसको ही ज्ञान अथवा नॉलेज कहा जाता है। स्वर्ग स्थापन हो गया फिर नॉलेज की दरकार नहीं। यह नॉलेज बच्चों को पुरूषोत्तम संगमयुग पर ही सिखलाई जाती है।

2] सबको जाना है फिर आना है। यह ड्रामा बना हुआ है। है भी कुदरती ड्रामा। कुदरत यह है जो इतनी छोटी सी आत्मा अथवा परम आत्मा में कितना पार्ट भरा हुआ है। परम-आत्मा को मिलाकर परमात्मा कहा जाता है। तुम उनको बाबा कहते हो क्योंकि सभी आत्माओं का वह सुप्रीम बाप है ना।

3] आत्मा ही जैसे-जैसे अच्छे वा बुरे कर्म करती है तो ऐसा वह फल पाती है। बुरे संस्कारों से पतित बन पड़ती है, तब तो देवतओं के आगे जाकर उनकी महिमा गाते हैं। अभी तुमको 84 जन्मों का पता पड़ गया है, और कोई भी मनुष्य नहीं जानता। तुम उनको 84 जन्म सिद्ध कर बतलाते हो तो कहते हैं– क्या शास्त्र सब झूठे हैं? क्योंकि सुना है मनुष्य 84 लाख योनियां लेते हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं वास्तव में सर्व शास्त्रमई शिरोमणी है ही गीता। बाप अभी हमको राजयोग सिखला रहे हैं जो 5 हजार वर्ष पहले सिखलाया था।

4] बाप कहते हैं तुम मेरी महिमा करते हो ना। अब मैं आया हूँ तुमको अपना परिचय दे रहा हूँ। मैं हर 5 हजार वर्ष के बाद इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ, कैसे आता हूँ वह भी समझाता हूँ। चित्र भी हैं। ब्रह्मा कोई सूक्ष्मवतन में नहीं होता है। ब्रह्मा यहाँ है और ब्राह्मण भी यहाँ हैं, जिसको ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर कहा जाता है, जिसका फिर सिजरा बनता है। मनुष्य सृष्टि का सिजरा तो प्रजापिता ब्रह्मा से ही चलेगा ना। प्रजापिता है तो जरूर उनकी प्रजा होगी। कुख वंशावली तो हो न सके, जरूर एडप्टेड होंगे। ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर है तो जरूर एडाप्ट किया होगा। तुम सब एडाप्टेड बच्चे हो।

5] अभी तुम ब्राह्मण बने हो फिर तुमको देवता बनना है। शूद्र से ब्राह्मण फिर ब्राह्मण से देवता, यह **बाजोली** का खेल है।

6] गीता में भी कोई-कोई अक्षर अच्छे हैं। **मनमनाभव अर्थात मुझे याद करो।** शिवबाबा कहते हैं मैं यहाँ आया हूँ। किसके तन में आता हूँ, वह भी बताता हूँ। ब्रह्मा द्वारा सब वेदों-शास्त्रों का सार तुमको सुनाता हूँ। चित्र भी दिखाते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते। अभी तुम समझते हो– शिवबाबा कैसे ब्रह्मा तन द्वारा सब शास्त्रों आदि का सार सुनाते हैं। 84 जन्मों के ड्रामा का राज़ भी तुमको समझाते हैं। इनके ही बहुत जन्मों के अन्त में आता हूँ। यही फिर पहले नम्बर का प्रिन्स बनते हैं फिर 84 जन्मों में आते हैं।

✺ योग-

1] सतोप्रधान बनना है इसलिए बाप को भी जरूर याद करना है फिर स्वीट होम को भी याद करना है क्योंकि वहाँ जाना है फिर माल-मिलकियत भी चाहिए इसलिए अपने स्वर्ग धाम को भी याद करना है क्योंकि यह प्राप्ति होती है।

...2

2] बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और कोई व्रत नेम नहीं है।

3] अब बाप समझाते हैं– मीठे-मीठे बच्चों, मैंने 5 हज़ार वर्ष पहले भी तुमको समझाया था कि अपने को आत्मा समझो। देह के सब सम्बन्ध छोड़ मुझ एक बाप को याद करो तो इस योग अग्नि से तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे।

4] सहजयोग का आधार है– संबंध और प्राप्ति। संबंध के आधार पर प्यार पैदा होता है और जहाँ प्राप्तियां होती हैं वहाँ मन-बुद्धि सहज ही जाता है। तो संबंध में मेरेपन के अधिकार से याद करो, दिल से कहो मेरा बाबा और बाप द्वारा जो शक्तियों का, ज्ञान का, गुणों का, सुख-शान्ति, आनंद, प्रेम का खजाना मिला है उसे स्मृति में इमर्ज करो, इससे अपार खुशी रहेगी और सहजयोगी भी बन जायेंगे।

✹ धारणा-

1] अब बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनो। कुमार और कुमारियां तो हैं ही पवित्र। उन्हों को फिर समझाया जाता है– ऐसे गृहस्था में फिर जाना नहीं है जो फिर पवित्र होने का पुरूषार्थ करना पड़े। भगवानुवाच है कि पावन बनो, तो बेहद के बाप का मानना पड़े ना। तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रह सकते हो। फिर बच्चों को पतित बनने की आदत क्यों डालते हो। जबकि बाप 21 जन्मों के लिए पतित होने से बचाते हैं। इसमें लोक लाज कुल की मर्यादा भी छोड़नी पड़े। यह है बेहद की बात।

2] देह-भान से मुक्त बनो तो दूसरे सब बन्धन स्वत: खत्म हो जायेंगे।

✹ सेवा-

1] तुम्हारे सेन्टर्स पर वा म्युज़ियम में बहुत बड़े-बड़े अक्षरों में जरूर लिखा हुआ हो कि **बहनों और भाइयों यह पुरूषोत्तम संगमयुग है, जो एक ही बार आता है।** पुरूषोत्तम संगमयुग का अर्थ भी नहीं समझते हैं तो यह भी लिखना है– कलियुग अन्त और सतयुग आदि का संगम। तो संगमयुग सबसे सुहावना, कल्याणकारी हो जाता है। बाप भी कहते हैं मैं पुरूषोत्तम संगमयुग पर ही आता हूँ। तो संगमयुग का अर्थ भी समझाया है। वेश्यालय का अन्त, शिवालय का आदि- इसको कहा जाता है पुरूषोत्तम संगमयुग। यहाँ सब हैं विकारी, वहाँ सब हैं निर्विकारी। तो जरूर उत्तम तो निर्विकारी को कहेंगे ना। पुरूष और स्त्री दोनों उत्तम बनते हैं इसलिए नाम ही है पुरूषोत्तम।

2] बच्चे जानते हैं आत्मा ही सारा पार्ट बजाती है। मनुष्य यह नहीं जानते। वह तो कह देते आत्मा निर्लेप है। वास्तव में यह अक्षर रांग है। यह भी बड़े-बड़े अक्षरों में लिख देना चाहिए– आत्मा निर्लेप नहीं है।